इकाई 3 पुरुषत्व (Masculinities)

संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 पुरुषत्व (मैस्कुलिनिटी) की चर्चा क्यों?

3.4 पुरुषत्व की परिभाषा

3.5 पुरुषत्व को समझना

3.6 पुरुषत्व की निर्मिति (रचना)

3.7 पुरुषत्वों (masculinities) के रूप

3.8 पितृसत्ता और पुरुषत्व

3.9 पुरुषत्व और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा

3.10 लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) और पुरुषत्व

3.11 मीडिया की भूमिका

3.12 निष्कर्ष

3.13 इकाई के समापन पर प्रश्न

3.14 सन्दर्भ

3.1 प्रस्तावना

समाज तथा अकादमिक जगत दोनों क्षेत्रों में प्रारम्भ में महिलाओं के आन्दोलन महिलाओं के नेताओं के रूप में तथा संघर्ष के परिणामों को प्राप्त करने वालों के रूप में उभरने के साथ शुरू हुए। परिवर्तन की दर धीमी पायी गई और यह सिक्के के महज एक ही पहलू को देखने जैसा था। यह महसूस किया गया कि महिलाओं के सशक्तीकरण की प्रक्रिया में पुरुषों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए पुरुषत्व को तथा पुरुषों और महिलाओं पर इसके प्रभावों को समझना अनिवार्य है ताकि समाज में जेंडरीकृत सामाजिक अभिवृत्ति और उम्मीदों में परिवर्तन लाया जा सके।

इस इकाई की शुरूआत हम इस विषय पर परिचर्चा से करेंगे कि जेंडर संवेदीकरण के पाठ्यक्रम में पुरुषत्व (masculinity) और पुरुषत्व (masculinities) पर बात करना क्यों जरूरी है, पुरुष और महिला इन संकल्पनाओं से किस प्रकार प्रभावित होते हैं। इसके बाद आप पढ़ेंगे कि पुरुषत्व को किस प्रकार परिभाषित किया जाता है; इसके रूप क्या–क्या हैं; इसकी रचना कैसे होती है; पितृसत्ता, हिंसा और लैंगिकता से इसका क्या सम्बन्ध है। इकाई का अन्तिम हिस्सा पुरुषत्व की रचना में मीडिया की भूमिका पर केन्द्रित है तथा इसके बाद निष्कर्ष आता है। आइए, अब इस इकाई के अध्ययन के उद्देश्यों पर निगाह डालें।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप :

- पुरुषत्व की रचना को परिभाषित और व्याख्यायित कर सकेंगे;

- पुरुषत्व, पितृसत्ता, हिंसा और लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) के बीच सम्बन्ध का वर्णन कर सकेंगे; और
- पुरुषत्व के रूपों पर तथा विभिन्न समाजों में पुरुषों एवं महिलाओं पर उसके प्रभावों पर चर्चा कर सकेंगे।

3.3 पुरुषत्व (मैस्कुलिनिटी) की चर्चा क्यों?

लड़के और पुरुष जिस समाज में रहते हैं या अपना कार्य करते हैं, उस समाज की पुरुषत्वमूलक (मैस्कुलिन) अपेक्षाओं (उम्मीदों) के अनुरूप उपयुक्त जेंडर भूमिकाओं और व्यवहारों को सीखते हैं। लड़के बिल्कुल अपने बचपन से ही इस बारे में सन्देश पाने लगते हैं कि एक "लड़का" होने का मतलब क्या है। लड़कों और लड़कियों को खेलने के लिए जो खिलौने दिए जाते हैं, उन्हें देखकर आप समझ सकते हैं कि जेंडरीकरण (gendering) किस प्रकार घटित होता है। उन खेलों को भी गौर से देखिए जो छोटे लड़के और लड़कियाँ खेलते हैं, देखिए कि उनमें से प्रत्येक किस भूमिका को हाथ में लेता है। आप पाएँगे कि यह उनकी जेंडर भूमिकाओं का स्वाभाविक विस्तार है, जिसे वे परिवार में और परिवार के बाहर समाज में घटित होते देखते हैं।

आइए, उस चीज पर एक निगाह डालें, जो कमला भसीन कहना चाहती हैं :

- जेंडर मुद्दे ऐसे मुद्दे नहीं हैं, जो केवल महिलाओं से ही सम्बन्धित हों। स्त्रीत्व का अस्तित्व पुरुषत्व से अलग होकर अकेले में नहीं होता। महिलाएँ अधीनस्थ होती हैं क्योंकि पुरुष महिलाओं पर हावी होने योग्य हैं।
- पुरुष और लड़के उस स्टीरियोटाइपिंग का शिकार होते हैं, जो पितृसत्तात्मक संस्कृति से उपजती है। यह संस्कृति उन्हें न सिर्फ महिलाओं का, बल्कि पूरे परिवार का संरक्षक और अन्नदाता बनाती है। इस पितृसत्तात्मक उम्मीद पर सवाल उठाना जरूरी है। इसे इस सन्दर्भ में समझना आवश्यक है कि किसी समाज में पुरुषत्व की रचना किस प्रकार की जाती है।
- पुरुष भी ऐसे श्रेणीतन्त्रीय शक्ति सम्बन्धों के अधीन होते हैं, जिन्हें एक खास किस्म के पुरुषत्व द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। उदाहरण के लिए, सौम्य लड़कों और पुरुषों का शक्तिशाली और मर्दाना किस्म के पुरुषों/लड़कों द्वारा यौन शोषण किया जाता है।
- जेंडर मुद्दों को समझना और सम्बोधित करना पुरुषों के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे न सिर्फ महिलाओं को, बल्कि पुरुषों को भी प्रभावित करते हैं।
- समकालीन दौर में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों ने जेंडर भूमिकाओं और सम्बन्धों में बदलावों को बढ़ावा दिया है। इसने स्टीरियोटाइपमूलक पितृसत्तात्मक धारणाओं की चूलें हिला दी हैं, जिसे स्वीकार करना पुरुषों के लिए मुश्किल होता है। खासतौर से, शिक्षा और रोजगार में पुरुषों के वर्चस्व, उनकी शक्ति और विशेषाधिकारों के क्षरण ने मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समस्याओं को बढ़ावा दिया है। इन समस्याओं की वजह से निराशा और आक्रोश बढ़ा है, जिसके कारण महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और हिंसक अपराध बढ़े हैं, नशाखोरी और मद्यपान की घटनाएँ बढ़ी हैं।
- पुरुषों के सक्रिय समर्थन के बिना समानता, विकास और शान्ति की महिलाओं की माँग को पूरा नहीं किया जा सकता। इससे पुरुषों को भी उन पितृसत्तात्मक बेड़ियों से मुक्ति मिलेगी, जिन्होंने उनकी भलाई को अवरुद्ध कर रखा है।

- महिलाओं के विरुद्ध पुरुषों द्वारा की जाने वाली हिंसा को समझने के लिए पुरुषत्व की रचनाओं (निर्मितियों) को समझना अनिवार्य है।

भसीन (2004, पृष्ठ 2-5)

अतः अब आप देख सकते हैं कि समाज में महिलाएँ और लड़कियाँ जेंडर जैसा भेदभाव झेलती हैं, उसे समझने के लिए पुरुषत्व और उसके प्रकारों पर चर्चा करना क्यों आवश्यक है। यह भी कि पुरुषत्व के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक विचार रेखाओं को परिवर्तित करके तथा स्त्रीत्व की धारणा में भी बदलाव लाकर हम एक ऐसे समाज की तरफ अग्रसर हो सकते हैं, जो जेंडर के दृष्टिकोण से अधिक न्यायपूर्ण और संवेदनशील हो। आइए, अब पढ़ते हैं कि पुरुषत्व को किस प्रकार परिभाषित किया जाता है।

3.4 पुरुषत्व (मैस्कुलिनिटी) की परिभाषा

पुरुषत्व (मैस्कुलिनिटी) शब्द 'पौरुष (मैस्कुलिन)' का संज्ञा रूप है, जिसका तात्पर्य पारम्परिक रूप से पुरुषों से सम्बद्ध गुणों और दिखावट (appearance), खासतौर पर ताकत और आक्रामकता, को धारण करने से है। दूसरे शब्दों में, पुरुषत्व प्राथमिक रूप से ऐसी विशेषताओं और गुणों से सम्बद्ध है, जिन्हें सामाजिक रूप से परिभाषित और निर्मित किया जाता है। इस प्रकार किसी दिए गए समाज या संस्कृति में, पुरुषत्व पुरुषों और लड़कों के अभिलक्षणों को दी गई सामाजिक परिभाषा है। जेंडर की ही तरह पुरुषत्व भी एक 'सामाजिक निर्मिति' है। अर्थात् यह समाज ही है जो निर्धारित करता है कि पुरुषों और लड़कों को किस तरह के कपड़े पहनने चाहिए, किस तरह व्यवहार करना चाहिए, किस तरह कार्य करना चाहिए; उनके पास कौन–कौन सी अभिवृत्ति (attitude) और गुण होने चाहिए तथा उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। अतः पुरुषत्व पुरुषों की तरफ से की जाने वाली सामाजिक–आर्थिक उम्मीदों (अपेक्षाओं) का एक ऐसा समुच्चय है, जो आज्ञा देता है कि उन्हें कैसा दिखना चाहिए, कैसा व्यवहार करना चाहिए, कैसे कमाना चाहिए आदि।

किसी विशेष समाज से किसी दूसरे समाज में जाने पर पुरुषत्व में अन्तर आ जाता है। उदाहरण के लिए, इंग्लैण्ड में एक पुरुष से अपने पुरुषत्व को व्यक्त करने की जैसी उम्मीद की जाती है, वह उस उम्मीद से अलग हो सकती है, जिस तरीके की उम्मीद किसी पुरुष से अपने पुरुषत्व को व्यक्त करने के लिए मिस्र या भारत में की जाती है। इस प्रकार, समय और भूगोल के सन्दर्भ में, पुरुषत्व स्थैतिक (static) भी नहीं होता। और चूँकि अपनी जाति, वर्ग, नृजातीयता, प्रजाति और यहाँ तक कि यौन झुकावों में भी सभी पुरुष एक जैसे नहीं होते; अतः पुरुषत्व एक अखण्ड निर्मिति (monolithic construct) नहीं हो सकता। इसीलिए इसे 'पुरुषत्वों (masculinities)' के रूप में सन्दर्भित करना पड़ता है।

> पुरुषत्व हमेशा स्थानीय होता है और परिवर्तन के अधीन होता है। जो चीज परिवर्तित नहीं होती, वह है पुरुष की शक्ति या पुरुष प्रधान विचारधारा का औचित्य बताना और उसे स्वाभाविक मानकर स्वीकार करते चले जाना।
>
> आर्थर ब्रिट्टैन (कमला भसीन, 2004, में पृष्ठ 9 पर उद्धृत)

आइए, अब पुरुषत्व से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं तथा पुरुषत्व के विभिन्न रूपों के बारे में पढ़ें।

3.5 पुरुषत्व को समझना

पुरुषत्व की विपरीत निर्मिति यानी स्त्रीत्व पर निगाह डाले बिना पुरुषत्व को नहीं समझा जा सकता। हम कह सकते हैं कि 'एक महिला/लड़की वह है' जो 'एक पुरुष/लड़का नहीं है' और हम इसका उल्टा भी कह सकते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि पुरुषवाचक विशेषताएँ और गुण, स्त्रीवाचक विशेषताओं और गुणों के विपरीत रूप होते हैं। जैसाकि आपने उपरोक्त हिस्से में पढ़ा है कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व, दोनों का निर्धारण जीव–वैज्ञानिक रूप से नहीं होता, बल्कि ये सामाजिक निर्मितियाँ हैं। इस प्रकार जेंडर पहचानें सामाजिक–आर्थिक रूप से निर्धारित की जाती हैं। आइए, सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत पुरुषवाचक और स्त्रीवाचक विशेषताओं में से कुछ पर निगाह डालें –

पुरुषवाचक	स्त्रीवाचक
तार्किक	भावुक
मजबूत	कमजोर
फुर्तीला (स्मार्ट)	सुन्दर
उदासीन/रूखा	देखरेख करने वाली
आक्रामक	पोषण करने वाली
साहसी	संकोची
हिंसक	दयालु
रोबदार/घमण्डी	सहनशील
स्वतन्त्र	निर्भर

जब हम उपरोक्त पुरुषवाचक और स्त्रीवाचक विशेषताओं को सामाजिक सम्बन्ध के दायरे में ले जाते हैं तो हम पाते हैं कि अगर एक पुरुष से आक्रामक, नियन्त्रणकर्ता और गर्म मिजाज होने की उम्मीद की जाती है; तो वहीं एक स्त्री से उम्मीद की जाती है कि वह विनम्र, कोमल, धैर्यवान और सीधी हो। इस प्रकार आप देखते हैं कि विशेषताओं के एक समुच्चय को कारगर होने के लिए यह जरूरी होगा कि विशेषताओं का दूसरा समुच्चय उन्हें स्वीकार करे। यानी अगर कोई व्यक्ति शासन करता है, तो किसी ऐसे व्यक्ति का होना आवश्यक है जिस पर शासन किया जाए और अगर एक श्रेष्ठ है तो दूसरे को घटिया होना ही चाहिए।

क्या होगा अगर इन पुरुषवाचक और स्त्रीवाचक रूढ़ प्रारूपों (स्टीरियोटाइप्स) की यथास्थिति का अनुसरण न किया जाए? उदाहरण के लिए, अगर कोई लड़की गैर–मानकीय व्यवहार करे, तो उसे अधीन बनाने के लिए समाज द्वारा उसके साथ बहुत क्रूर बर्ताव किया जा सकता है। यहाँ तक कि उसके साथ हिंसा के चरम रूप जैसे बलात्कार या हत्या तक का बर्ताव किया जा सकता है। मान लीजिए कि अगर किसी लड़के की रोने की प्रवृत्ति है या वह सौम्य है तो उसे 'कायर' या 'स्त्रैण' कहा जाता है और अगर कोई लड़की आक्रामक या प्रभावशाली है तो उसे अपमानजनक तरीके से 'मर्दाना' करार दिया जाता है।

बॉक्स सं. 3.1

पुरुषत्वों (masculinities) को समझने और उसे चुनौती देने का बुनियादी अर्थ हमारे समाज में श्रेणीतन्त्रीय शक्ति सम्बन्धों और व्यवस्थाओं पर विचार करना और उन पर

सवाल उठाना है।

पुरुषों और महिलाओं के बीच के अन्तर प्रकृति के कारण होते हैं या शिक्षा और पालन–पोषण के कारण होते हैं या दोनों कारणों से होते हैं, इसे लेकर विशेषज्ञों में मत भिन्नता है।

बिल्कुल प्रारम्भिक अवस्था से ही बच्चे ऐसे सन्देश या संकेत प्राप्त करने लगते हैं, जो उनके व्यक्तित्व को लड़कों और लड़कियों के रूप में ढालते हैं। इसके अलावा जेंडरीकरण (gendering) के एजेण्ट कहे जाने वाले बाहरी स्रोत भी होते हैं जो उन आदर्शों या मानकीय व्यवहारों या भूमिकाओं को उपलब्ध कराते हैं, जिनकी किसी दिए गए समाज में प्रत्येक सदस्य से उम्मीद की जाती है। समाज में परिवार और मित्र, विद्यालयों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों जैसी शैक्षणिक संस्थाएँ, मीडिया, धर्म और अन्य सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाएँ – ये सभी जेंडरीकरण के एजेंट हैं। ये क्रमशः अपनी संस्कृति और समाज में पुरुषों और लड़कों के लिए पुरुषत्व की निर्मितियों को आकार प्रदान करते रहते हैं। किसी दी गई स्थिति या घटना के सन्दर्भ में समाज लड़कों/लड़कियों से अलग–अलग अभिवृत्तियों और व्यावहारिक प्रतिक्रियाओं की उम्मीद करता है जिससे जेंडरीकृत समाजीकरण को बढ़ावा मिलता है।

बॉक्स सं. 3.2

जेंडरीकृत समाजीकरण की व्याख्या लड़कों और लड़कियों के लिए उस वरीयता के रूप में की जा सकती है, जो उन्हें अलग–अलग तरीके से समाजीकृत करती है। लड़कों को पुरुषों की जेंडर भूमिकाओं और अपेक्षाओं का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तथा लड़कियों से यह उम्मीद की जाती है कि वे स्त्रियों की ऐसी भूमिकाओं, व्यवहारों और कार्यों के अनुरूप रहें जो महिलाओं के लिए उपयुक्त होते हैं।

परिवार आमतौर पर बच्चों को जेंडरीकृत तरीके से समाजीकृत करता है। परिवार बिना सोचे-समझे और सांस्कृतिक रूप से अपेक्षित परिणामों के अनुसरण में ऐसा करता है। उदाहरण के लिए, अधिकांश भारतीय घरों में लड़कों को बताया जाता है कि वे रोया न करें क्योंकि यह काम तो लड़कियों का है। लड़के अगर किसी गुड़िया के साथ खेलना चाहें या अपने माथे पर एक 'बिन्दी' लगा लें या अपनी माँ अथवा बहन की तरह चूड़ी पहन लें तो उनका उपहास उड़ाया जाता है। यहाँ तक कि जीवन के बिल्कुल प्रारम्भिक वर्षों से ही परिवार द्वारा लड़कों को पलटवार करने और बदला लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। किसी लड़ाई के दौरान मार खाने वाले पक्ष की तरफ होने या विपक्षी के सामने हार जाने की बजाय उन्हें 'पलट कर वार करना' सिखाया जाता है। यह भी कि जीतने को प्रत्येक परिस्थिति के लक्ष्य के रूप में प्रोत्साहित किया जाता है ताकि चित्त पर प्रतिस्पर्द्धा की छाप पड़े और किसी भी कीमत पर जीत को हासिल किया जाए।

पुरुषत्व को किसी व्यक्ति की आयु, धर्म, जाति, वर्ग, प्रजाति, नृजातीयता और लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) से भी आकार मिलता है। चूँकि पितृसत्ता असमानता और श्रेणीतन्त्रीय सामाजिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करती है, यह पुरुषों को श्रेष्ठतर मानती है। ऐसे पुरुषों को महिलाओं की तुलना में और उन पुरुषों की तुलना में ऊँचा स्थान दिया जाता है, जो अपनी पद–प्रतिष्ठा और हैसियत के कारण निम्नतर स्थिति में होते हैं। ऊँचे स्थान वाले ये पुरुष महिलाओं के साथ–साथ उन पुरुषों को भी आदेश देते हैं और उन पर नियन्त्रण रखते हैं, जो पद–प्रतिष्ठा और हैसियत में नीचे होते हैं। इस अर्थ में, पुरुषत्व की श्रेष्ठता को पितृसत्ता से भी समर्थन मिलता है क्योंकि पुरुषत्व न सिर्फ पुरुषों और महिलाओं के बीच

के सम्बन्ध को परिभाषित करता है, बल्कि यह पुरुषों के बीच सम्बन्ध को भी परिभाषित करता है। यह भी देखा गया है कि अपने अधीनस्थों पर प्रमुखता बनाने के लिए सार्वजनिक जीवन में महिलाएँ भी कार्य करने या नेतृत्व करने के पुरुषवाचक तरीकों का अनुसरण करती हैं ताकि वे पुरुषों की तरह आक्रामकता और नियन्त्रण दर्शा सकें। एक धारणा (परसेप्शन) यह है कि महिलाएँ शक्ति की व्यवस्था का पुरुषत्वीकरण किए बिना सफल नहीं हो सकतीं। इससे यह सुझाव मिलता है कि हमें 'पुरुषत्व और स्त्रीत्व' दोनों की अवधारणाएँ समझनी पड़ेंगी। और हमें इस तथ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए कि ये निर्मितियाँ जीव–वैज्ञानिक नहीं हैं, बल्कि ये चेतना की संरचनाएँ हैं जो पुरुषों और महिलाओं दोनों, में उपस्थित हो सकती हैं।

3.6 पुरुषत्व की निर्मिति (रचना)

यह एक मिथक है कि पुरुषत्व जीव–वैज्ञानिक होता है, यानी अपने शरीर क्रिया विज्ञान के परिणामस्वरूप पुरुषों के पास पुरुषवाचक अभिलक्षण होते हैं या यह सब कुछ हार्मोनों का खेल होता है। तब हमें यह विश्वास करना पड़ेगा कि सभी पुरुष रोबदार/घमण्डी, आक्रामक, तुनकमिजाज/गर्ममिजाज और हिंसक होते हैं तथा उनमें से कोई भी पुरुष भिन्न नहीं हो सकता क्योंकि सभी की जीव–वैज्ञानिक रचना समान ही होती है। लेकिन हमें ऐसे पुरुष अवश्य मिलते हैं, जिनके भीतर इनमें से अनेक अभिलक्षण मौजूद नहीं होते। फिर सोचिए कि एक पुरुष जो अपनी पत्नी के सामने इतना रोबदार और हिंसक होता है, वही अपने मालिक (बॉस) के सामने क्यों इतना अधिक दीन–हीन और भयग्रस्त हो जाता है। इससे साबित होता है कि पुरुष ठेठ पुरुषवाचक व्यवहार को वहीं वर्णित या रूपायित करते हैं, जहाँ उनके पास शक्ति और प्रभाव की हैसियत होती है अन्यथा वे अधीनस्थ स्थिति में होने पर तथाकथित 'स्त्रीवाचक गुणों' के सामने घुटने टेक देते हैं। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि पुरुषत्व और इस सन्दर्भ में स्त्रीत्व कोई जीव–वैज्ञानिक निर्मितियाँ नहीं हैं, बल्कि ये पुरुषों और स्त्रियों के बीच के सम्बन्धों को विनियमित करने वाले श्रेणीतन्त्र और शक्ति की गतिकी से शासित होती हैं।

बॉक्स सं. 3.3

पुरुषत्ववाद एक दृष्टिकोण है जो पुरुषों की श्रेष्ठता और उनके प्रभुत्व में विश्वास करता है और उसका औचित्य साबित करता है। यह पुरुषों के अनन्य मत, उनकी अनन्य अभिवृत्ति, मूल्यों, व्यवहार और अभिलक्षणों को प्रेक्षित करने और उन्हें प्रोत्साहित करने से सन्दर्भित होता है।

एण्ड्रोजिनी वह अवस्था है, जिसमें पुरुष और महिला जेंडर दोनों के अभिलक्षण/दिखावट पायी जाती है।

निम्नलिखित अनुभागों में आप पुरुषत्वों (masculinities) के विभिन्न रूपों के बारे में पढ़ेंगे।

3.7 पुरुषत्वों (masculinities) के रूप

कॉनेल (1995) पुरुषत्वों के निम्नलिखित रूपों पर चर्चा करती हैं :

- वर्चस्वमूलक पुरुषत्व, पुरुषत्व का वह रूप है जो प्रभावी होता है और जो महिलाओं और पुरुषों पर वर्चस्व स्थापित करने की एक सफल रणनीति को अभिव्यक्त करता है। कॉनेल इसे पुरुषत्व के ऐसे सत्तावादी सांस्कृतिक रूप के नाम से सन्दर्भित करती हैं, जो पुरुषों के प्रभुत्व और महिलाओं के सम्पूर्ण समर्पण की माँग करते हुए महिलाओं की

अधीनता का समर्थन करता है। इसकी निर्मिति ऐसे अनेक अन्य पुरुषत्वों (masculinities) के सम्बन्ध में भी होती है जो वर्ग, जाति, प्रजाति और लैंगिकता द्वारा प्रभावित होते हैं। यद्यपि यह पुरुषत्व का एक प्रभावी रूप है किन्तु बहुत कम पुरुष ही मानकों तक सचमुच पहुँच सकते हैं। इस वजह से अनेक पुरुषत्वों का उद्‌भव होता है, जैसाकि नीचे चर्चा की गई है।

- अधीनस्थ पुरुषत्व : पुरुषों के समूहों के बीच भी प्रभुत्व और अधीनता के जेंडर सम्बन्ध मौजूद होते हैं। उदाहरण के लिए, समलैंगिक पुरुष अनेक प्रथाओं/व्यवहार/अभिवृत्तियों के जरिये सामान्य पुरुषों के अधीन होते हैं। समलैंगिक पुरुषों को सांस्कृतिक और आर्थिक बहिष्करण का सामना भी करना पड़ता है। ये गलियों में होने वाली हिंसा, कार्यस्थलों पर होने वाले भेदभाव तथा व्यक्तिगत रूप से किए जाने वाले बहिष्कार का लक्ष्य होते हैं। ऐसा दमन समलैंगिक पुरुषत्वों को पुरुषों के बीच जेंडर श्रेणीतन्त्र में सबसे नीचे ला खड़ा करता है। समलैंगिक (Gay) पुरुषत्व सर्वाधिक सहज रूप से दिखाई देने वाला पुरुषत्व है लेकिन यह अकेला अधीनस्थ पुरुषत्व नहीं है। कुछ विषमलैंगिक (Heterosexual) पुरुष और लड़के भी उपहास का पात्र बनते हैं, जब स्त्रीवाची विशेषताओं से युक्त संस्कार प्रदर्शित करने के कारण उन्हें कायर (स्त्रैण), बेवकूफ, उबाऊ, माँ का लाडला बेटा आदि जैसे अपशब्दों से सम्बोधित किया जाता है।

- सहभागितामूलक (या सह–अपराधमूक) पुरुषत्व : पुरुषत्व के वर्चस्वमूलक पैटर्न (व्यवहार और अभिवृत्ति) को अमल में लाने वाले पुरुषों की संख्या समग्रतः हमेशा बहुत कम होती है। लेकिन इस वर्चस्वमूलक रूप का लाभ बहुत सारे पुरुषों को स्पिल–ओवर बोनस की शक्ल में मिलता है। यहाँ पुरुषों को कोई ऐसा डर या खतरा नहीं होता कि वे वर्चस्वमूलक पुरुषत्व के सबसे आगे वाले मोर्चे पर रहकर आघात सहें बल्कि इन पुरुषों को लाभ अप्रत्यक्ष रूप से मिलता है। इस प्रकार वे इस पुरुषत्व में सहभागी हो जाते हैं क्योंकि यह समाज में महिलाओं की व्यापक अधीनता के कारण पुरुषों को होने वाले सामान्य लाभ को हासिल करने में उनकी मदद करता है।

- हाशियाकृत (Marginalized) पुरुषत्व : यहाँ जेंडर की पारस्परिक क्रिया अन्य संरचनाओं, जैसे – वर्ग, प्रजाति या जाति के साथ होती है। इसके कारण आगे जाकर पुरुषत्वों के बीच अधिक श्रेणीतन्त्रीय सम्बन्धों का जन्म होता है। यह प्रभुत्वशाली और अधीनस्थ वर्गों, जातियों या नृजातीय समूहों में पुरुषत्वों के बीच एक सम्बन्धमूलक स्थिति (relational situation) है।

पिछले कुछ अनुभागों में आपने जो सीखा है, उसके मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित अभ्यास करें :–

अपनी प्रगति को जाँचिए

1) पुरुषत्व क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पुरुषत्वों के विभिन्न रूपों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

आइए, अब उस महत्वपूर्ण सम्पर्क (Linkage) पर निगाह डालें जो पितृसत्ता और पुरुषत्व के बीच होता है।

3.8 पितृसत्ता और पुरुषत्व (MASCULINITY)

पितृसत्ता और पुरुषत्व आपस में बहुत नज़दीकी से जुड़े हुए हैं। पुरुषों के प्रभुत्व का सिद्धान्तीकरण करने के परिणामस्वरूप इन दोनों चीजों का उद्‌भव 1960 के दशक में हुआ। जैसाकि आप पिछली इकाई में पहले ही पढ़ चुके हैं, पितृसत्ता पुरुषों का महिलाओं और अन्य पुरुषों पर व्यवस्थित प्रभुत्व है। यह भी कि पितृसत्ता मुख्य रूप से सामाजिक संस्थाओं और संरचनाओं के ज़रिये कार्यान्वित की जाती है, जबकि पुरुषत्व (masculinities) वैकल्पिक तरीकों का ऐसा क्रम है, जिसमें पुरुषों के जेंडर सम्बन्ध अभिव्यक्त किए जाते हैं। यह भी कि अधिकांशतः यह किसी व्यक्ति या किन्हीं व्यक्तियों के एक छोटे समूह तक सीमित होता है। उदाहरण के लिए, हम कह सकते हैं कि एक संस्था के रूप में परिवार पितृसत्तात्मक होता है, जबकि हो सकता है कि परिवार का मुखिया (अनुमानतः एक पुरुष) वर्चस्वमूलक पुरुषत्व को प्रदर्शित (portray) कर रहा हो।

अक्सर पितृसत्ता और पुरुषत्व का प्रयोग अदल–बदल कर किया जाता है जबकि ये दोनों अपने अभिविन्यास (orientation) में और सम्बन्धित संकल्पनाओं के पदों में अलग–अलग हैं। लेकिन पुरुषत्व से आक्रामकता और प्रभुत्व जैसी पारम्परिक रूप से जुड़ी हुई अनेक नकारात्मक विशेषताएँ पितृसत्ता के कार्य हैं। पितृसत्ता पुरुषत्व की असन्तुलित अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर सकती है। वास्तव में पुरुषत्व को समझने का उद्देश्य पुरुषों को पितृसत्तात्मक बदनामी से और इसके परिणामस्वरूप होने वाले पुरुषवाचक अनुभवों की कमी के डर से मुक्त करना है। पितृसत्ता शक्ति और अधीनता के सामाजिक जगत का प्रावधान करती है जिसमें पुरुषों को प्रतिस्पर्धा करने के लिए बाध्य होना पड़ता है अगर वे विरासत में मिले अपने पुरुषत्वों (masculinities) का लाभ लेना चाहते हों।

जब पितृसत्तात्मक धारणाओं का मुकाबला किया जाता है, तो वर्चस्वमूलक पुरुषत्व शक्ति की रक्षा करने के लिए परिवर्तित हो जाता है।

पितृसत्ता के लाभ पुरुषों को असमान रूप से मिलते हैं। भारत में वर्चस्वमूलक पितृसत्ता वर्ग, जाति और विषमलैंगिकता (heteroseuality) से प्रभावित होती है। यह स्त्रीत्वों (femininities) और विभिन्न अधीनस्थ पुरुषत्वों (masculinities) के सम्बन्ध में निर्मित की जाती है जो एक बार फिर समाज में निम्नतर प्रस्थिति से और गैर–मानकीय लैंगिकताओं से सम्बद्ध होते हैं जैसाकि श्रमिक वर्ग, दलितों और समलैंगिकों के मामले में होता है।

बॉक्स सं. 3.4

पितृसत्ता और पुरुषत्व के बीच चक्रीय सम्बन्ध

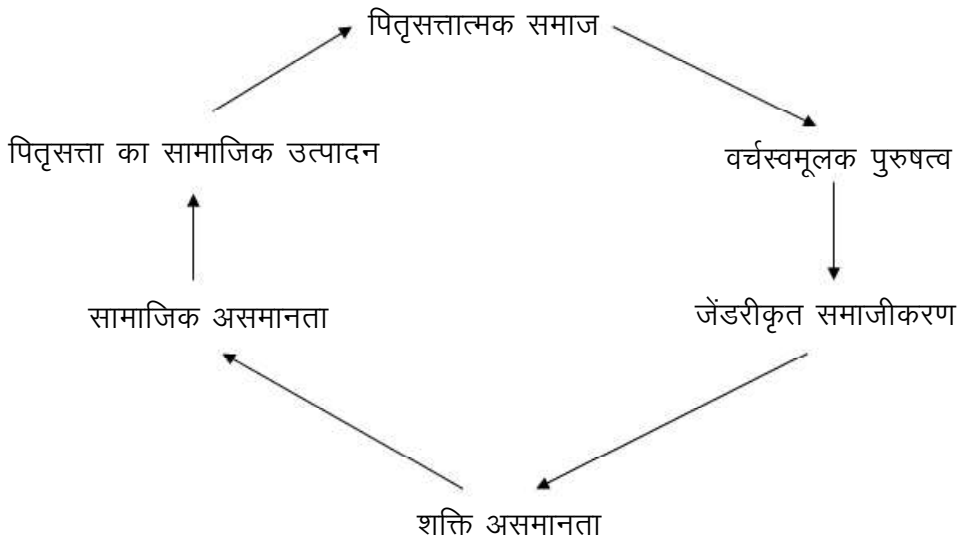

स्रोत : एलेक्स स्कॉट सैमुएल (www-scielosp-org)

3.9 पुरुषत्व और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा

महिलाओं से उम्मीद की जाती है कि वे पुरुषों के नियन्त्रण में रहें। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि किसी महिला से विवाह करने के बाद उसका पति (माना जाता है कि यह उस स्त्री का स्वामी है) सोचता है कि पत्नी को नियन्त्रण में बनाए रखने के लिए उस पर आपा खो देना या उसे पीटना उसका अधिकार है। रोचक तो यह है कि कई महिलाएँ यह स्वीकार करती हैं कि अगर अपने पति की माँगों को पूरा न कर पाने पर पति द्वारा उन पर हिंसा का प्रयोग किया जाता है, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। ऐसा महिलाओं के सामाजिक प्रशिक्षण (अनुकूलन) के कारण होता है।

हिंसा पुरुषों द्वारा महिलाओं पर अपना प्रभुत्व और अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए अधिकांशतः थोप दी जाती है। इसे अनेक समाजों में स्वीकार किया जाता है और इसलिए महिलाओं पर हिंसा करने वाले पुरुष बच निकलते हैं। हिंसा महिलाओं को अधीनता की स्थिति में बनाए रखती है और सामाजिक नियन्त्रण में भी बनाए रखती है।

अनेक राष्ट्रीय सर्वेक्षणों ने दर्शाया है कि भारतीय समाज में घरेलू हिंसा अत्यधिक प्रचलित है और विवाहित महिलाओं में से पचास प्रतिशत महिलाएँ इसे अपने वैवाहिक जीवन के सामान्य अंग के रूप में प्रतिवेदित करती हैं। इन सर्वेक्षणों/अनुसंधानों का इससे भी अधिक चिन्ता में डालने वाला निष्कर्ष यह है कि घरेलू हिंसा निजी या गोपनीय स्तर पर नहीं होती। समुदाय को इसकी जानकारी होती है लेकिन परिवार का निजी मामला मानकर इसकी उपेक्षा कर दी जाती है।

अनुसंधान यह भी दर्शाता है कि परिवार में लड़कों और लड़कियों के जेंडरीकरण में घरेलू हिंसा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह उन जेंडर पहचानों को आकार भी देती है, जो लड़कों और लड़कियों द्वारा अपने परिवारों में और व्यापक रूप से समाज में अभिव्यक्त की जाती हैं। वे अपने माता–पिता के प्रतिमान (पैटर्न) और व्यवहार से सीखते हैं। बड़े होने की प्रक्रिया के दौरान लड़के जिस हिंसा को देख चुके होते हैं, उसे जारी रखना वे उचित मानते

हैं तथा लड़कियाँ इसे स्वीकार करते हुए आत्मसात कर लेती हैं और इसके प्रति सहनशील होती चली जाती हैं। हमारा लोक–साहित्य भी किसी पुरुष प्रेमी के हिंसक व्यवहार को महिमामण्डित करता है!

इस प्रकार, पितृसत्तात्मक समाजों में पुरुषों की हिंसा और आक्रामकता का औचित्य पुरुषत्व की निशानी के तौर पर स्थापित किया जाता है। पुरुषों से उम्मीद की जाती है कि वे परिवार में महिलाओं और बच्चों के अन्नदाता और संरक्षक बनें। इस प्रकार पारिवारिक सदस्यों को अनुशासन में रखने को पुरुष अपना कर्त्तव्य मानते हैं ताकि परिवार/समुदाय की प्रतिष्ठा सुरक्षित रहे।

बॉक्स सं. 3.5

> अगर हम हिंसा, संघर्ष और युद्धों को कम करना चाहते हैं; अगर हम शांति चाहते हैं; अगर हम सार्थक सम्बन्ध चाहते हैं और अगर सतत विकास में सचमुच हमारी रुचि है तो हमें पुरुषों और पुरुषत्व को समझना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त लड़कों/पुरुषों और लड़कियों/महिलाओं के बीच हमें साझेदारी का विकास करना होगा ताकि जेंडर न्याय हासिल किया जा सके। महिलाएँ आन्दोलन का नेतृत्व कर सकती हैं लेकिन विशाल संख्या में पुरुषों को इसमें शामिल करना होगा।
>
> कमला भसीन, 2004 पृष्ठ 5

आप इस इकाई में पहले ही पढ़ चुके हैं कि लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) और पुरुषत्व आपस में जुड़े हुए हैं। आइए, इस पर दुबारा निगाह डालते हैं ताकि यह समझा जा सके कि ये दोनों आपस में किस तरह जुड़े हुए हैं।

3.10 लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) और पुरुषत्व

आपने सीखा है कि पुरुषत्व आक्रामकता, प्रभुत्व और नियन्त्रण का प्रतिनिधित्व करता है। तब यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि पुरुषत्व यौन सम्बन्धों समेत सभी प्रकार की पारस्परिक क्रियाओं और सम्बन्धों को प्रभावित करता है। पुरुषों की लैंगिकता, आक्रामकता और हिंसा अनेक तरीकों से सम्बन्धित हैं। इसका एक उदाहरण पुरुषों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा और उक्तियाँ हैं। गौर करने पर आप पाएँगे कि पुरुषों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले सभी दुर्वचनों (गालियों) के लैंगिक निहितार्थ होते हैं और पुरुष हर ऐसी चीज के बारे में इन दुर्वचनों का प्रयोग बहुत ही सहजता से करते हैं, जो उन्हें करनी होती हैं या नहीं करनी होती हैं या जिस चीज के बारे में वे नाराज होते हैं।

पुरुषों का मस्तिष्क सेक्स को एक नियन्त्रणकारी क्रियाविधि (mechanism) के रूप में ग्रहण करता है और जो महिलाएँ कभी यौनिक पेशगियों के समक्ष प्रतिक्रिया देने या प्रस्तुत होने से इनकार करती हैं, वे इसके भयंकर दुष्परिणाम झेलती हैं। आपने युवा महिलाओं पर तेजाब फेंकने की अनेक घटनाओं के बारे में अखबारों में जरूर पढ़ा होगा। ये ऐसी युवा महिलाएँ होती हैं जिन्होंने अपराधी द्वारा की गई यौनिक पेशगियों का विरोध किया हुआ होता है और अपराधी इस दावे के साथ उस महिला पर तेजाबी हमला करता है कि अगर वह महिला उसकी नहीं हुई तो वह किसी और की होने लायक ही नहीं रह जाएगी।

पुरुष की हिंसक लैंगिकता भी सार्वजनिक स्थलों जैसे – सड़कों, जन परिवहन के साधनों, शैक्षणिक संस्थाओं और कार्यालयों में होने वाले यौन उत्पीड़न के लिए जिम्मेदार है (इस पाठ्यक्रम के खण्ड ... की इकाई ... पढ़ें)। किसी महिला को दण्ड देने के लिए पुरुष उसका बलात्कार करता है। 'निर्भया बलात्कार काण्ड' पर निगाह डालिए, जहाँ एक पुरुष के साथ

रात में बाहर निकलने के दण्डस्वरूप महिला का क्रूरतापूर्ण बलात्कार किया गया और उस महिला के मित्र को भी पीटा गया क्योंकि वह एक महिला के साथ बाहर घूम रहा था।

इस प्रकार बलात्कार पुरुषत्व लैंगिकता और हिंसा के बीच के सम्बन्ध का सबसे अधिक भीषण दुष्परिणाम है। बलात्कार का उपयोग एक हथियार के रूप में युद्धों, प्रलयों (holocausts) और साम्प्रदायिक दंगों के दौरान प्रभावित समुदायों और राष्ट्रों के पुरुषों और महिलाओं को दण्डित करने के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। भसीन (2004, पृष्ठ 32) लिखती हैं, "हिंसक पुरुषत्व के कारण महिलाओं को हर किसी के पाप की कीमत चुकानी पड़ती है और खासतौर से महिला के रूप में जन्म लेने के बुनियादी पाप की कीमत चुकानी पड़ती है।"

एक पुरुष द्वारा दूसरे पुरुष के विरुद्ध हिंसा भी आम बात है और समकालीन समाजों में ऐसी हिंसा बढ़ रही है। यह बहुत ही हानिकारक है और यह स्वयं को सशक्त बनाती जा रही है। यह सिद्ध करने के लिए प्रमाण मौजूद हैं कि युवावस्था में जाकर हिंसक और आक्रामक हो जाने की सम्भावना ऐसे लड़कों में अधिक होती है जिन्होंने अपने बचपन में अधिकारों का उल्लंघन और दुर्व्यवहार झेला होता है। अपराधों में संलिप्त अधिकांश पुरुषों के बारे में यह पाया गया है कि उनके बचपन में उन पर अत्याचार और हिंसा की गयी थी। इस तरह यह दुष्चक्र जारी रहता है। यह पुरुषत्व की धारणा ही है जो लड़कों और पुरुषों को ताकतवर और बलशाली होने की तरफ धकेलती है।

अतः यह समझना महत्वपूर्ण है कि आपराधिक प्रवृत्ति, अपराध और पुरुषत्व गली–मुहल्लों की लड़ाइयों, वसूली की घटनाओं, भूमि और सेक्स सौदों और अण्डरवर्ल्ड माफिया की अन्य गतिविधियों के रूप में सचमुच के जीवन की स्थितियों में किस प्रकार जुड़े हुए हैं और किस प्रकार अभिव्यक्त होते हैं।

बॉक्स सं. 3.6

> पुरुषों की अधिक आक्रामकता अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) के क्षेत्र में भी व्याप्त होती है। सामान्यतः यौन सम्बन्ध की शुरूआत पुरुष करते हैं। महिलाओं की लैंगिकता के बारे में माना जाता है कि वह महिला की ग्रहणशीलता में होती है और इसका विस्तार स्त्रीवाचक व्यक्तित्व की समग्र संरचना, जैसे– निर्भर, निष्क्रिय, अनाक्रामक और विनम्र, तक कर दिया जाता है।
>
> एन ओकले, 1985

आइए, अब इस बारे में अध्ययन करें कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व की भी धारणाओं को मीडिया किस प्रकार बल प्रदान करता है।

3.11 मीडिया की भूमिका

मीडिया जेंडरीकरण का एक दूसरा एजेंट है, जो स्त्रीत्व और पुरुषत्व दोनों की धारणाओं को मजबूत बनाता है। स्त्रीत्व और पुरुषत्व की धारणाओं की निर्मिति करने में खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सशक्त प्रभाव रखता है। इन चीजों के बारे में यह वक्तव्य देता है कि परिवार, समुदाय और व्यापक तौर पर समाज में क्या पहना जाए, कैसे बातचीत की जाए और किस प्रकार व्यवहार किया जाए। उदाहरण के लिए, मीडिया पुरुषों को आक्रामक और मर्दाने रूप में प्रक्षेपित करता है। क्या आपको पता है कि फिल्म इण्डस्ट्री में 'एंग्री यंग मैन' के ठप्पे वाला एक दौर आया था? हिन्दी फिल्म 'मर्द' इसका चित्रण करती है कि समाज

लड़कों के जेंडरीकरण के साथ कैसा व्यवहार करता है और उन्हें इस चीज के लिए कैसे प्रेरित करता है कि वे आक्रामकता दिखाकर या हिंसक व्यवहार अपनाकर अपने वर्चस्वमूलक पुरुषत्व की निर्मिति करें। एक अन्य हालिया फिल्म 'एनएच 10' भी वर्चस्वमूलक पुरुषत्व का अत्यन्त मार्मिक चित्रण करती है। इस फिल्म में दिखाया गया है कि परिवार की प्रतिष्ठा को बचाने के लिए न सिर्फ बहन और उसके मंगेतर पर, बल्कि उन लोगों पर भी हिंसा उचित है जो तथाकथित 'पापी लड़की' और उसके प्रेमी की मदद करते हैं।

हमारे विज्ञापन भी पुरुषत्व और स्त्रीत्व के जेंडर सम्बन्धी दृढ़ प्रारूपों (स्टीरियोटाइप्स) को मजबूत बनाते हैं। पुरुषों की आक्रामकता और उनकी शक्ति को सराहा जाता है और उन्हें आदर्श की तरह प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक पुरुष जब कीचड़ में या पहाड़ों पर तेज रफ्तार से मोटरसाइकिल चलाता है; या ऊँचे पहाड़ों और इमारत से कूदता है तो वह अपनी सख़्ती को ही दिखा रहा होता है। विज्ञापन से पहले चलाए जाने वाले इनकारी बयान (डिस्क्लेमर) पर शायद ही ध्यान दिया जा सकता हो। यह इनकारी बयान तो महज कानूनी औपचारिकता पूरी करने के लिए ही चलाया जाता है, वरना दर्शक के मन पर शक्ति का सख़्त प्रदर्शन ही प्रमुख प्रभाव छोड़ता है।

आपको यह जरूर पता होगा कि एक (टीवी) चैनल ऐसा है जो हमेशा कुश्ती ही दिखाते रहने के लिए समर्पित है। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ की सनक युवा लड़कों पर इस तरह सवार होती है कि वे डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के अपने नायकों का अनुसरण करते हुए उनकी तस्वीरें पोस्टर की शक्ल में लगाते हैं और कमजोर लड़कों को घुमाकर देने में रस पाते हैं।

टीवी चैनलों पर प्रसारित किए जाने वाले धारावाहिकों या नाटकों पर निगाह डालिए। वृद्ध पुरुषों को अन्नदाताओं और संरक्षकों के रूप में दिखाया जाता है जबकि युवा पुरुषों के बारे में यह दिखाया जाता है कि वे अलग–अलग रूपों और तीव्रता से पुरुषों और महिलाओं दोनों के साथ हिंसा में लिप्त रहते हैं। टेलीविजन पर ऐसी मीडिया छवियों को देखकर लड़के आक्रामक पुरुषत्व को एक मानक की तरह स्वीकार करना सीखते हैं।

3.12 निष्कर्ष

हम पढ़ चुके हैं कि पुरुषत्व दूसरों पर शक्ति स्थापित करने से सम्बन्धित है। जो लोग प्रस्तुत होते हैं, वे स्त्रीवाचक हैं और जो लोग प्रभावी होते हैं, वे पुरुषवाचक हैं। यह ऐसा सुझाव देने के लिए नहीं है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच की विविधता को मिटा देना चाहिए। यह ऐसा कहने के लिए भी है कि सभी पुरुष एक जैसे नहीं होते और सभी महिलाएँ एक जैसी नहीं होतीं। दृढ़ रूढ़ प्रारूपों (rigid stereotyping) को चुनौती देने और तोड़ने की जरूरत है क्योंकि यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए हानिकर है; भले ही यह उनके लिए अलग–अलग ढंगों और अलग–अलग तरीकों से हानिकर हो। व्यक्ति (चाहे वह व्यक्ति पुरुष हो या महिला) की योग्यता और उसके रुझान के आधार पर, न कि उसके जेंडरीकृत समाजीकरण के आधार पर होने वाली विविधता और विकल्पों का खुलापन होना महत्वपूर्ण है। पितृसत्ता श्रेणीतन्त्रों और असमानताओं को पैदा करती है जो न सिर्फ लड़कियों और महिलाओं के लिए हानिकारक हैं, बल्कि समग्र रूप से परिवार और समाज के लिए भी हानिकारक हैं।

इस प्रकार समाज द्वारा किया गया यह श्रेणीकरण कि क्या पुरुषवाचक है और क्या स्त्रीवाचक – अवास्तविक है क्योंकि यह सम्भव है कि ऐसा श्रेणीकरण इस बात को रूपायित न कर पाए कि तमाम पुरुष और महिला वास्तव में क्या महसूस करते हैं, बल्कि यह श्रेणीकरण केवल इतना ही रूपायित कर सके कि कुछ भी महसूस करने के लिए उनसे

किस प्रकार की उम्मीद की जाती है। इसलिए किसी भी प्रगतिशील समाज के लिए पुरुषत्व को और स्त्रीत्व को भी पुनःपरिभाषित करने की आवश्यकता है।

3.13 इकाई के समापन पर प्रश्न

- पुरुषत्व को परिभाषित कीजिए।
- हमारे समाज में अनेक प्रकार के पुरुषत्व क्यों मौजूद हैं?
- पुरुषत्व और हिंसा के बीच के सम्बन्ध पर एक टिप्पणी लिखिए।
- व्याख्या कीजिए कि किसी समाज में जेंडरीकरण के एजेंट पुरुषत्वों को किस प्रकार आकार प्रदान करते हैं।

3.14 सन्दर्भ

भसीन कमला (2004) एक्सप्लोरिंग मैस्कुलिनिटी।

कॉनेल, आर. डब्ल्यू. (1987) जेंडर एण्ड पॉवर : सोसायटी, द पर्सन एण्ड सेक्सुअल पॉलिटिक्स। कैम्ब्रिज : पॉलिटी।

मेसनर, माइकेल, ए. (2006) मेन एण्ड मैस्कुलिनिटीज इन व्हाइटहेड, स्टीफेन, एम (एडिटेड) मेन एण्ड मैस्कुलिनिटीज क्रिटिकल कॉन्सेप्ट्स एन सोशियोलोजी, लन्दन एण्ड न्यूयॉर्क : रूटलेज।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY